184
680 P
H
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1371/10/71

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 6802

19/11

891.431
A897R

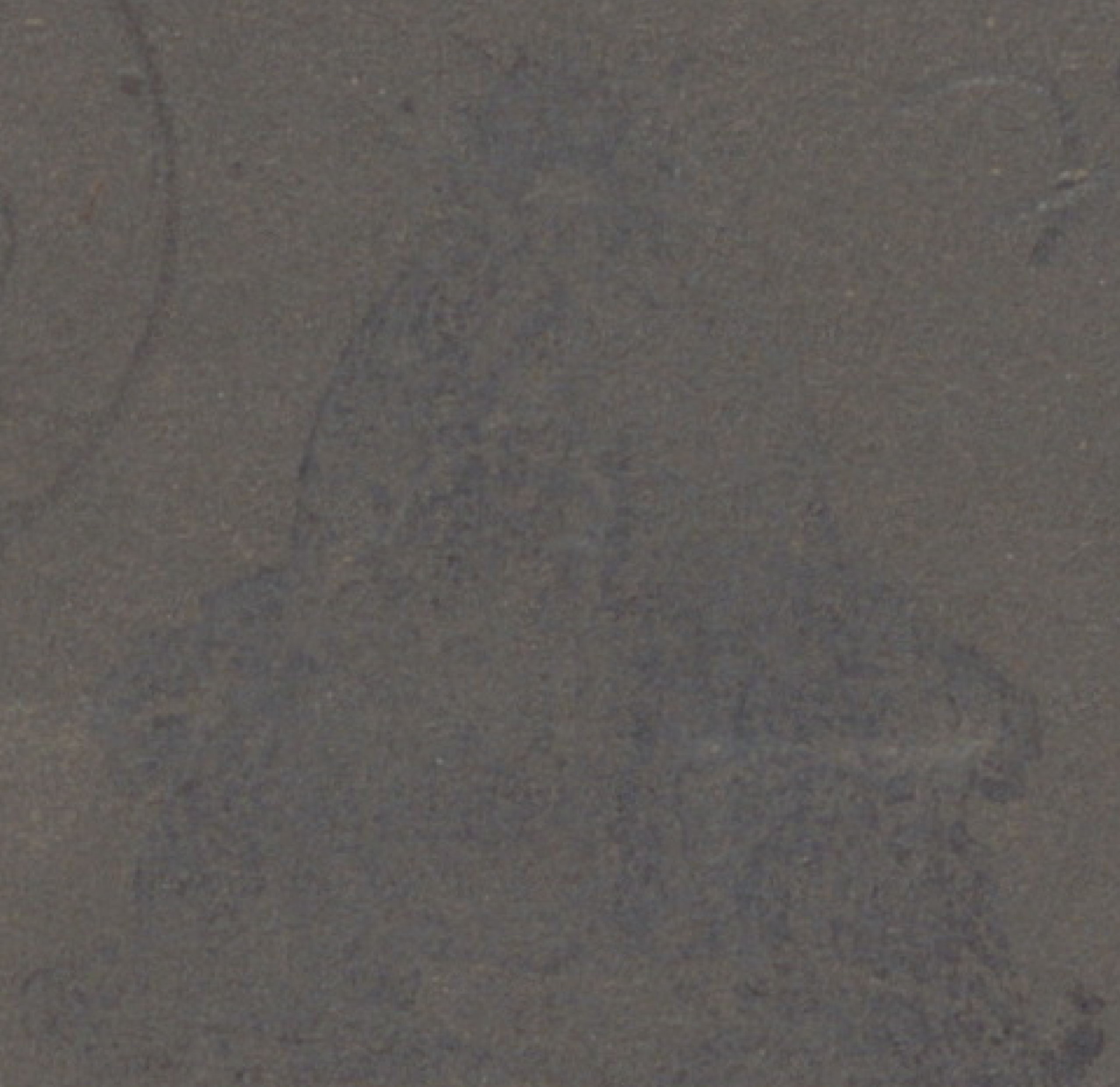

ॐ तत्सत्

राष्ट्रीय संगीतिमाला

का

प्रथम कुसुम

जिसमें

वर्तमान समय के अनुसार स्वराज्य
सम्बन्धीतथा धार्मिक व
ऐतिहासिक उत्तम उत्तम
भजनों का संग्रह किया है

* संग्रह कर्त्ता *

कुंवर नरेन्द्रसिंह वर्मा आर्य

भजनोपदेशक

(म० वि० ज्वालापुर)

प्रकाशक

सरस्वती भूषण श्री पं० सत्यव्रत शर्मा

व्याकरण भूषण

धामपुर (बिजनोर)

प्रथम बार १००० | विक्रमाब्द १९७९ फाल्गुन सुदि पूर्णिमा | मूल्य ॥)

82 SN 275

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 680
Date 17.12.71
GOVT. OF INDIA

मुद्रक—
पं० कृष्णकुमार शर्मा
विद्याभास्कर प्रेस कनखल

समर्पण

मेरे परम पूज्य गुरुवर ?

"स्वर्गवासी श्री पण्डित वासुदेवजी शर्मा भजनोपदेशक ऊमरी" आपकी अपार कृपा तथा शुभ आशीर्वाद से मुझे इतना साहस हुआ कि मैं आज अपने देशवासी भाइयों के सन्मुख इस "राष्ट्रीय संगीत माला" नामक छोटीसी पुस्तक को लेकर उपस्थित होसका हूं अतः पूजनीय गुरुवर आप ही के चरण कमलों में सादर समर्पित करता हुआ साग्रह प्रार्थना करता हूं कि भगवान् कृष्णके—

" पत्रं पुष्पं फलं तोयं योमे भक्त्या प्रयच्छति ।"

इस वाक्य के अनुसार मेरी यह तुच्छातितुच्छ भेट स्वीकार हो ।

विनीत सेवक
नरेन्द्र वर्म्मा

नम्र निवेदन

पाठक-गण !

मेरा बहुत दिनोंसे विचार था कि मैं वर्तमान आन्दोलन सम्बन्धी तथा ऐतिहासिक भजनोंका संग्रह कर प्रकाशित कराऊँ। ईश्वरकी कृपा से आज वह विचार कार्य रूप में परिणत हो सका है। उसी का फल रूप यह "स्वराज्य संगीतमाला" नामक पुस्तक पाठकों की सेवामें उपस्थित करता हूं। यदि इस—"माला" का आपने प्रेमसे स्वागत किया और मुझे यह प्रतीत हुआ कि पाठकों को यह माला—रुचि कर प्रतीत हुई है तो इसका "दूसरा कुसुम" अर्थात् द्वितीय भाग शीघ्र ही प्रकाशित होगा। मैं आशा करता हूं कि पाठक अनेक त्रुटियोंके होते हुए भी हंसक्षीर न्याय से इस मेरे अल्पसंग्रह को अपनायेंगे। तथा मेरा साहस द्विगुणित करेंगे।

विनीत—

नरेन्द्रसिंह

आवश्यक-सूचना ।

प्रिय पाठक वृन्द ! आप के करकमलों में—

"स्वर्गवासी श्री पूज्य पण्डित वासुदेव जी शर्मा" द्वारा निर्मित तथा संग्रहीत "राष्ट्रिय गीताञ्जलि" अर्थात् "स्वराज्य संगीत" के प्रथम व द्वितीय भाग पहुंच चुके हैं संग्रह कैसा हुआ है इसके विवेचन का भार हम पाठकों के ऊपर ही छोड़ते हैं। पाठकों ने उसे इतना अपनाया कि उसकी प्रतियां अब थोड़ी ही शेष हैं उस में वर्त्तमान आन्दोलन सम्बन्धी-तथा ऐतिहासिक भजनों का संग्रह किया गया है । जिसकी समालोचना व प्रशंसा—"सम्पादक कर्मवीर" अपने समाचार पत्र द्वारा मुक्त कण्ठ से कर चुके हैं—ऐसी पुस्तक को आप अवश्य मंगाकर उससे लाभ उठाइये--हम अपने भाई भजनीकों से भी प्रार्थना करते हैं कि उन्हें इस पुस्तकको अवश्य मंगाना चाहिये प्रायः "कांग्रेस" के उत्सवों पर--लोगों को--राष्ट्रिय भाव पूर्ण भजनों के सुनने का अवसर मिलता है उस अवसर पर इधर उधर न भटक कर आप हमारी पुस्तक से ही सहायता लीजिये। दोनों भागों का मूल्य ॥)

पण्डित जी की बनाई हुई और भी उत्तमोत्तम पुस्तकें यहां मिल सकती हैं।

प्रबन्धकर्त्ता

न्यायदत्त शर्मा

वासुदेव पुस्तकालय धामपुर

बिजनौर ।

ॐ तत्सत्

॥ वन्देमातरम् ॥

राष्ट्रिय संगीत माला

का

प्रथम कुसुम ।

ईश्वर प्रार्थना

ग़ज़ल नं० १

भगवान् ! अब तो भारत के दुःख दूर कर दे ।
करके कृपा कृपामय ! संकट समस्त हरले ॥ १ ॥
धन हीन हाय भारत स्वामी हुआ है आरत ।
सब होगया है ग़ारत कुत्तों की मौत मरते ॥ २ ॥
भरपूर रो चुके हैं सर्वस्व खो चुके हैं ।
बर्बाद हो चुके हैं अन्यायियों के कर से ॥ ३ ॥
सब छोड़ बीर बाने कायर बने ज़नाने ।
अवनति के ठाठ ठाने दुर्भाव चित्त धरते ॥ ४ ॥
इज्ज़त सभी पुरानी है धूल में मिलानी ।
बस रह गई कहानी पानी हैं आज भरते ॥ ५ ॥
जिनको हमीने भाई, थी सभ्यता सिखाई ।
अब वे करें हंसाई भारत का माल चरते ॥ ६ ॥

विश्वेश अब हमारा--चमके पुनः सितारा ।
फिर बज उठे नक़ारा हर एक देश घर से ॥ ७ ॥

ग़जल नं० २

खुल गई हैं आंख अब तो-मुल्क हिंदोस्तान की ।
दाल गल सकती नहीं अब-हज़रते शैतान की ॥
एक दिन को दावत--हो तो कोई कर सके ।
सदियों तक होती है खातिर-कहीं भला महमानकी॥ १ ॥
जावो अपने घर को हम तो बाज़ आये आप से ।
फिर बुलालेगें ज़रूरत होगी गर जलियान की ॥ २ ॥
देवियों के खोले घूंघट मार्शलला में गये ।
सब कथा हम सुन चुके-पञ्जाब के अपमान की ॥ ३ ॥
जबके रावण ने हरी सीता-हुआ था क्या हवाल ।
फूंक दी लंका वहां पर--जय हुई हनुमान की ॥ ४ ॥
द्रौपदी का चीर खींचा-तब मचा था क्या ववाल ।
कौरवों के खून से-रक्षा हुई थी मान की ॥ ५ ॥
देदी उस डायर को पिन्सन और लाखोंका इनाम ।
कद्रदानी की गई ये हिन्द के अपमान की ॥ ६ ॥
ये खिलाफ़त में मुसलमानों से भी झूठे पड़े ।
क्या वकत अब रह गईहै अहद और पै मान की ॥ ७ ॥
फिर कहा जाता है हमसे आप इनको भूल जांय ।
खुल गई है पोल अब तो बृटिश के ईमान की ॥ ८ ॥
कहते हैं मेशीन गन से भून देगें तोप से ।

चाहे जो कुछ भी हो परवा है नहीं अब जान की ॥ ६ ॥
जेल भेजो काले पानी फांसी देदो शौक़ से ।
करेगें तामील अब तो गांधी के फरमान की ॥ १० ॥

भजन नं० ३

सिले में जां बाज़ियो के तमग़े ।
जनाब लेकर मैं क्या करूंगा ॥
मुझे तो स्वराज की तलब है ।
खिताब लेकर मैं क्या करूंगा ॥ १ ॥
मंकी हो गो तुम मंका है मेरा ।
करूं मैं क्या कौंसिलों में जाकर ॥
रुपये पै जब है तुम्हारा कब्ज़ा ।
हिसाब लेकर मैं क्या करूंगा ॥ २ ॥
हुवे हैं बत्तीस साल पूरे ।
तुम्हारे दर पै गदाई करते ॥
सवाल करके मैं क्या करूंगा ।
जवाब लेकर मैं क्या करूंगा ॥ ३ ॥
तरीक मेरा अदम ताआव्वुन ।
उसूल मेरा अदम तशद्दुद ॥
जहां मे हूं बे गुनाह हुस्नी ।
अज़ाब लेकर मैं क्या करूंगा ॥ ४ ॥
हुबा न तीनसौ बरस में भो है ।
तुम्हारे मकतब में पढ़के क़ाबिल ॥

सबक़ तुम्हारा तुम्हें मुबारिक ।
किताब लेकर मैं क्या करूंगा ॥ ५ ॥
जहां में हिन्दी है नाम मेरा ।
*शर्फ़ है रूहानियत में मुझ को ॥
मुझे तो मरग़ूब गंगा जल है ।
शराब लेकर मैं क्या करूंगा ॥ ६ ॥

ग़ज़ल नं० ४

देखना है हिम्मते मर्दाना किस के दिल में है ।
दे वतन पै जां दिलावर कौन इस महफ़िल में है ॥ १ ॥
जान जाने का नहीं ख़ौफ़ो ख़तर कुछ दिल में है ।
दम अटक अपना रहा अब ख़ञ्जरे क़ातिल में है ॥ २ ॥
लुट गया सरा ख़ज़ाना वेबसी की राह में ।
क़ाफ़ला अब क़ौमका इफ़लास की मञ्ज़िलमें है ॥ ३ ॥
मर्दो ज़न पीरो ज़वां क्या तिफ्ल भी जाते हैं जेल ।
उस सितमगरके सितमसे सबकी जां मुश्किलमें है॥ ४ ॥
आके अख़िर तंग उसकी पौलसी से चाल से ।
नर्म भी कहतेहैं अब तो क्या धरा कौन्सिलमें है ॥ ५ ॥
सर हथेली पै लिये बैठे हैं शैदाये वतन ।
शोर महसर से सिवा अब कूचये क़ातिल में है ॥ ६ ॥
टूट जायेंगी क़फ़स की तिल्लियां सैय्याद की ।
ज़िन्दगी है दम अगर बाक़ी तने विस्मिल में है ॥ ७ ॥
सर करेगें दम में मैंदा क़ौम के लख्ते ज़िगर ।

---

* बुज़ुर्गी

क़ौम का सौदा है सर में क़ौम की धुन सर में है ॥ ८ ॥
है यक़ीं एक दिन हमें गांधी दिलावेगें स्वराज ।
क्या हुवा गर आज कल वो जेल की मंज़िलमें हैं ॥ ९ ॥
आरही है जेल की दीवारो दर से ये सदा ।
क़ौम के मजनू तेरी लैला इसी महफ़िल में है ॥ १० ॥
चलता है बेड़ा तेरा गांधी अज़ब रफ़्तार से ।
आही पहुंचा अब नहीं बाक़ी कसर साहिलमें है ॥ ११ ॥

गज़ल ५

शहीदों के खूं का असर देख लेना ।
मिटायेगा ज़ालिम का घर देख लेना ॥ १ ॥
किसी के इशारे के हम मुन्तज़िर हैं ।
बहायेंगें खूं की नहर देख लेना ॥ २ ॥
झुकादेंगे गर्दन को खुद ज़ेरे ख़ञ्जर ।
खुशी से कटायेगें सर देख लेना ॥ ३ ॥
जो नख़्ल हमने सींचा है ख़ूनेजिगर से ।
वो होगा कभी बार वर देख लेना ॥ ४ ॥
जो मगरूर गोली चलाते हैं हम पर ।
अब उनका ही क़दमों में सर देख लेना ॥ ५ ॥
न समझो कि काले पड़े सो रहे हैं ।
ये उगलेंगे एक दिन ज़हर देख लेना ॥ ६ ॥
किनारे पै आवे भंवर से ये किश्ती ।
वो आयेगी एक दिन लहर देख लेना ॥ ७ ॥

गज़ल ॥ ६ ॥

हथकड़ी जो हाथ में डाली मेरे सरकार है।
देश के आज़ाद करने का यही हथियार है ॥
फूंक देगी इस तरह से मिस्ल लंका की तरह।
आह पुर तासीर यह जंजीर की झनकार है ॥ १ ॥
जेलका किसकोहै खटका किसको सूलीका है डर।
देश पर कुर्बान होने को हर एक तय्यार है ॥ २ ॥
बच्चा २ हिन्द का है हो गया सीना सिपर।
रङ्ग लायेगा बदन का खून फिर एक बार है ॥ ३ ॥
राय साहब एम०ए०बीए० खान बहादुर कोईहो।
कद्र इनकी कुछ नहीं हर एक ज़लीलो ख्वार है ॥ ४ ॥
जिनको डर हो जेल का फांसीका खतरा हो जिन्हें।
चूड़ियां वो पहन लें उन का यही श्रृङ्गार है ॥ ५ ॥
मर्द कहना आज से अपने लिये वो छोड़ दे।
जो कलक्टर के लिये जोरू सा ताबेदार है ॥ ६ ॥
तेग़ हों तर्के ताआव्वुन की स्वदेशी की हो ढाल।
फिर बहादुर देश अपना अपना कारोबार है ॥ ७ ॥

गज़ल ॥ ७ ॥

अगर है नाज़ उनको तोप और जंगी रिसालों में।
क़यामत का असर रखते हैं हम भी अपने नालों में ॥१॥
भुलादें भेद दिल से आप गोरे और काले का।

अगर रहना है हिलमिलकर तुम्हें इन हिन्द वालोंमें ॥२॥
अजब क्या है अगर हिन्दू मुसलमानों में एका है।
खुदा ही एक है खुद मसजिदों और शिवालों में ॥ ३ ॥
उछलना कूदना घुड़की दिखाना भूल जायेंगें।
फंसेंगें गोरे चेहरे भी अगर जा करके कालों में ॥ ४ ॥
बने बैठे रहो खुद अपने ही दिल में मिया मिट्ठू।
मगर है आपकी गिनती दुनियां के रिजालों में ॥ ५ ॥
वफ़ादारी के एवज में दिया क्या खाक है तुमने।
छिपा है स्याह दिल बेशक तुम्हारी गोरी खालों में ॥ ६ ॥
दग़ाबाज़ी से अय सरयू ज़माना हो गया वाक़िफ़।
नहीं आने को अब कोई रहा योरूप की चालों में ॥ ७ ॥

डायर का सितम

गज़ल ॥ ८ ॥

याद डायर का सितम हमको जो आ जाता है।
दिल से वृटिश की महोब्बत को मिटा जाता है ॥
या से अफसोस नहीं इतना भी समझ में आता।
किसको बर्बाद करें कौन हुआ जाता है ॥
कौल पर आप को कायम जो नहीं पाते हैं।
इस लिए रङ्ग रैय्यत का उड़ा जाता है ॥
मिस्ल औलाद समझते हैं जो अपनी रय्यत।
फ़ेल अच्छों का यही मुद्दत से चला आता है ॥
बात कलकी है अभी दिन भी नहीं गुजरे हैं।

थी सदायें यही इंगलैण्ड लुटा जाताहै ॥
हिन्दियों दौड़ो खुदारा दौड़ो जल्दी।
सारे लन्दन में अंधेरा ही नज़र आता है ॥
हिन्द के काले नज़र आए तो सहमे गोरे।
जर्मनी खौफ से बरलिन को चला जाता है ॥
और अंधेरा था योरूप के एक तबके पर।
हिन्द वालों के ही सदके से बचा पाता है ॥
वो भी दिन याद रहे कहते थे हिन्द मुसलिम।
हमें बचाओ जर्मनी ही नज़र आता है ॥
कौड़याले हों अगर लाख सहम जाते हैं।
काला जिस वक्त कमर तोड़के बल खाता है ॥
जिन के ज़रिये से बची थी कल तुम्हारी जान।
उनको ही आज नज़र बन्द किया जाता है ॥
बस खबरदार खबरदार अय यारूप वालो।
चन्द ही रोज में तय किस्सा हुआ जाता है ॥
हकतलफ़ी का मिला है ये नतीजा तुम को।
ख्वाब में गान्धी का लश्कर जो नज़र आता है ॥
देखने में तो ये खुश रङ्ग नज़र आते हैं।
तुम से अहमद ये खरी बात कहे जाता है ॥

गज़ल ६

सितम तेरा नहीं मुझ पर सितम गर आज कुछ कम है
ये दिन फिर २ न आएगें सताले तेरा बे दम है ॥

रिहाई अब न पायेंगे तेरे दामे महोब्बत से
ये एक दिन का नहीं रोना ये सारी उम्रका ग़म है ॥
शवे फ़ुरकतकी घडियां हैं किसीकी याद है दिलमें
न अपना कोई साथी है, न अपना कोई हमदम है
हमारे से है क्या मतलब कोई आता है आने दो
खुशी कुछ उनके घर होगी यहां तो दौरे मातम है
सताया है ज़माने ने सभी को अपने हाथों से ।
न खुशरू ही जिन्दा हैं न दारा और अवज़म है
पडा हूं बेकसी सीना लगाये आज तनहा मैं
खुले हैं जख्म दिल मेरे न फाया है न मरहम है

गज़ल १०

दिल मिलगये हैं अब हरगिज न फटेगें।
आगे क़दम बढ़ा लिया पीछे न हटेगें। १
गांधी की सरपै टोपियां पहनी हैं खुशी से
ये सर गांधी के हो चुके सारे ही कटेंगे २।
मेहनत से जेल की कभी घबरायेगें नहीं
पीसेंगे चक्कियां भी रस्सी भी बटेगें ॥३॥
दुश्मन के होगें दोस्तो सब होश फाख्ता ।
उससे भी पहले जाके हम मक़तल में डटेंगे। ४॥
दुश्मन के सारे हौसले हो पस्त जायेंगे।
हिम्मत हमारी देखके अरमान घटेंगे ॥ ५॥
मरकर स्वर्ग को जायेगें हमको यक़ीन है

आज़ाद हिन्द हो ये वहां भी तो ।रटेंगे ।६ ॥
लिखलो बयां यह इन्द्र का सौवार हरीफो ।
जो कहदिया ज़बान से हरगिज़ न नटेंगे ॥ ७ ॥

भजन न० ११

सदा है लव पै सदा से ये ही
स्वराज्य लेगें स्वराज्य लेगें ॥
सताये हमको हज़ार कोई ।
स्वराज्य लेगें स्वराज्य लेगें ॥ १
ज़ु.लम सितम, जो ढाये हम पर ।
तो प्राण हंस २ के वार देगें ।
मगर कहेगें ये मरते मरते ।
स्वराज्य लेगें स्वराज्य लेगें ॥ २
हज़ार रौलट के पास बिल हों ।
और लाख वाके हों जलियान वाले
जबां पै लग जायं चाहें ताले ।
स्वराज्य लेगें स्वराज्य लेगें ॥ ३ ॥
घुसे यहां पै हैं गैर आके
किया हमारे ही घर पै कब्ज़ा ।
जुड़ा है, अब एकता का मेला
स्वराज्य लेगें स्वराज्य लेगें ॥ ४ ॥
ख़याल आज़ाद ही रहेगा
मशीन गन से चाहे उड़ादो ।

आवाज़ होगी ये बाद मुर्दन
स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥ ५

दादरा १२

देखो देखो ये नेकी हमारी
हमने जो काम किये पबलिक सब जानती है।
नेकी बदी का हाल सारा पहचानती है
राज भक्ति में जान वारी। १।
जर्मनके मुकाबले में क्या नहीं अहसान किये
बारह लाख हिन्दियोंने इनके लिये प्राण दिये
रोवें बिधवा करें आह ज़ारी॥ २ ॥
खर्चकी कमी पै हमने रुपया के बांधे तूल।
कर्ज़ा जङ्ग हमसे लिया इसको भी गये क्या भूल।
खासी हमदर्दी कीन्ही तुम्हारी ॥ ३
वायदा था स्वराज देगें लडाई के बाद तुम्हें।
भली भाँति मदद करो कर देंगे निहाल तुम्हें॥
फते होते ही भूल गये सारी। ४ ॥
पाते ही फ़ते के फ़ौरन पास रौलट एक्ट किया
सहस्रों ही हिन्दियों का अमृतसर में खून किया।
जान हरिदत्त डायर ने मारी ॥ ५ ॥

दादरा १३।

टेक—उठो भारत की रक्षा पै बाँधोकमर।

डर क्या है जेल-खानेसे बतला तो दीजिये
जिस राह गये लाजपत वो राह लीजिये
सी आरदास नेहरूका कहना तो कीजिये
भारतकी दशा देखकर कुछ तो पसीजिये।
जय बोल हिन्दकी उठो ऋषियों के हो पिसर
भाई तुम्हारे सैकड़ों ही जेल जारहे ॥ १ ॥
घर बैठे आप किस तरह खुशियां मनारहे।
लानत है ऐसे जीने पै खुशियां मना रहे
हिन्दोस्तां कीशान में बट्टा लगा रहे
सड़कर मरोगे खाट पर इसकी भी है खबर। २।
बे इज़्ज़ती के साथ कुछ जीना भी भला है
मरजायं तो बेहतर है अब जीना बुरा है।
जीवो तो जीवो शानसे ये मानो कहा है।
बतलाइये जीने में अब आनन्द ही क्या है
माता तुम्हारी गैरोंके कब्ज़े में है अगर ॥ ३ ॥
बत्तीस करोड़ आपकी मर्दुम शुमारी है
आज़ाद होना क्या तुम्हें बतलाओ भारी है
कोशिश करो तो एक दिनकी बात सारी है
महाराज तिलक देगये तीक्ष्ण कटारी है
गाँधी तुम्हारी फौज़ के दिये बना अफसर। ४
अब वक्त सोचने का नहीं आगे आइये
कानूनी फूंस फर्रैमें अग्नि लगाइये

सत्याग्रह में अपने को दाखिल कराइये।
मदान से कभी हरगिज़ हटकर न जाइये॥
हरदत्त मरो देश पर कुछ हो नहीं अमर॥ ५॥

आरज़ू दारम्।

गज़ल नं० १४

बसादे हिन्दकी उजड़ी नगरिया आरज़ू दारम्
इलाही लाजकी रखले पगरिया आरज़ू दारम्।
सताये न कोई ज़ालिम किसी मज़लूमको भगवन्।
दिखाये मत कोई तिरछी नज़रिया आरज़ू दारम्
खुदाया ये मुर्झाया चमन सरसब्ज़ हो फिरसे।
ज़रा बर्सादे रहमत की बदरिया आरज़ू दारम्
स्वदेशीका हो हर फ़र्दा वशर शैदा दिलो जाँसे।
भरे खद्दरसे मेरी हर बज़रिया आरज़ू दारम्
खुशी हैं अब तो बच्चो भी मचल जाते हैं यों कहकर
हमें खद्दरकी बनवादो सदरिया आरज़ू दारम्
मिटें अब ज़ुल्मकी ज़ुल्मत अयां अब नूरे रहमत हो
शबे ग़म अब खुशीकी हो सेहरिया आरज़ू दारम्
है पाई ज़ालिमो पे फ़तह मज़लमोंने दुनियां में
सुनादे कोई यारब! ये खबरिया आरज़ू दारम्
नहीं कुछ क़ैदे गांधी से रुकेगा अब स्वराज अपना
अवस मत यह चले टेढ़ी डगरिया आरज़ू दारम्

बहादुर वक्फ़ हो तन मन हमारा मुल्ककी ख़ातिर
कटे ये देश सेवामें उमरिया आरज़ू. दारम्

ग़ज़ल १५

मौका है ये चोखा कुछ करके जायेंगे हम।
जिन्दा ही जायेंगे या मरके जायेंगे हम ॥
दर्दो महन में फंसकर फर्याद भी न होगी
हरगिज़ नहीं ज़ुबांसे उफ़ भी सुनायेंगे हम ॥
तलवार खूँसे भरके अरमान सब निकालें
खूं का निशाँ न उनको हुतलक दिखायेंगे हम ॥
गुलशन में क्या ये गुलचीं बुलबुलसे कह रहा है
होगी अगर क़फ़स तो मजनूं कहायेंगे हम ॥
लैला हुवे वतन पै कुर्बानियां करेंगे
चश्मों से खूं का दरिया रो रो बहायेंगे हम।

पो०बी०भी खराडे प्रेम

ग़ज़ल १६

लुत्फ़ लायेगी कभी तासीर ये फर्याद की।
भूल शेखी जायगी सारी कभी सैयाद की ॥
वे गुनाहों का जहांमें क़त्ल करना क्या सहल
हाथसे शमशीर खुद गिर जायगी जल्लाद की
सलतनत यों ज़ुल्मकी भी देर तक होती नहीं
देर तक टिकती नहीं ज्यों नींव बे बुनियाद की
अब भला हम आपके क्या काम आयेंगे जनाब

आपने मिट्टी हमारी खूबही बर्बाद की
देशके जयचन्द हमको देसकेंगे क्या मदद
हाँ खुशासे हो तरक्क़ी लाल, है इमदाद की

दादरा १७

मिलने वाला है तुम को स्वराज्य
भाइयो धीरज धरो ॥
दुश्मन भी मादरे हिन्द के मजबूर हो चले
पूंजी जो पाप की थी वो भर पूर खो चले
उम्मैद कला होने पर रुझूर हो चले
वहशी भी चमने हिन्द से काफूर हो चले ।
सुनी गान्धी की धीमी आवाज़ ॥१॥
भारत में हुक्म गान्धी ने ये पास कर दिया
खद्दर के पहनने का भी विश्वास कर लिया
विलायत की मशीनों का भी नाश कर दिया
योरूप का जिन पै था नाज़ । २ ।
हैं देशबन्धु जेल को तफरीह जानते
वालियन्टर धर्म अपना ये खास जानते
बन्दूक और तोप पै हैं सीना तानते
योरूप के इबलीस फिरें खाक छानते
बहरे गम से है निकला जहाज़

भजन १८

बसन्त

है नींद गफलत की तेरी भारत
बतादे कब तक बसन्त होगा
सदा है लब पै सदा से ये ही
बसन्त होगा बसन्त होगा ॥
कमर कसोगे न तुम ही मित्रो
न छोड़े आलस तुम्हारा पीछा
भला समझते हो गर इसी को
बुरी तरह से बसन्त होगो ॥
खुदी में भूले फिरो हो तुम तो
न देश सेवा का ध्यान कुछ भी
करोगे सेवा जो प्राण पन से
बड़ी खुशी से बसन्त होगा
शरण अविद्या को लाखो होके
पड़े हुए हैं अनन्त दुःखमें
दिलासा दोगे तुम्हीं जो जाकर
तो उनके दुःख का बसन्त होगा।
नहीं है संदेह जरा भी इसमें
है धर्म वैदिक की नीव गहरी
मगर रहेगी जो चाल ये ही

तो जानो इसका बसन्त होगा
बुरी दशा के सुधारने को
पढ़ाओ बच्चों को वेद विद्या
ध्वजा उड़ेगी आकाश में फिर
बुरी दशा का बसन्त होगा ॥
तुम्हारे दुःखों के काटने को
उठे हैं 'गान्धी' 'मदन, वो शौकत
करोगे आज्ञा जो उनकी पालन
अनन्त दुःख का बसन्त होगा। ॥

शेर १६

रहेगी क्या हमेशा अब यों ही गर्दिश जमाने की ।
हमारी खुश नसीबी ने कसम खाई है आने की
इधर ठानी है किस्मत ने हमारे आज़माने की
उधर दुश्मन ने दिल में ठान ली हमको मिटानेकी

महज़ अभिमान जाति का कि जो नादान करते हैं
वह समझो वास्तव में क़ौम का नुकसान करते हैं ॥
मसल मशहूर है कि खुद जो अपना मान करते हैं ।
जो खुद उठता है उसकी ही मदद भगवान करते हैं॥
हर एक इन्सान अपनी अक़्लपर मगरूर होता है ।
मगर होता वही है जो उसे मन्जूर होता है ॥

ग़ज़ल २०।

उन्हें क्या ख़ौफ़ है जिनपर कि ईश्वर मह्रबां होवे।
न होवे बाल भी बांका जो दुश्मन कुल जहां होवे॥
शान्ति से काम लो छोड़ो न इस मर्याद को।
सर्द लोहा काट देता है गरम फौलाद को॥
शिर नहीं ऊंचा कभी रहते सुना अभिमान का।
अपने ही मुंह पर पड़ा थूका हुवा अस्मान का॥
मौत जब नज़दीक आती है किसी इन्सान की।
नष्ट हो जाती है शक्ति आंख की और कान की॥
कुछ खबर रहती नहीं है लाभ की और हानि की।
देख लो प्रत्यक्ष को हाजित नहीं प्रमाण की॥

हमारी दिली ख्वाहिश।

ग़ज़ल २१

किसी दुनियाँ के बन्दे को अगर शौके हकूमत हो।
तो मेरा शौक दुनियां में फ़क़त इन्सां की ख़िदमत हो॥
धर्म अपना कोई ज़ालिम अगर ज़ोरो जफा समझे।
मुहब्बत हो धर्म मेरा मेरा ईमान उल्फत हो॥
रुपये को खूबये क़िस्मत अगर कोई खुदा समझे।
उसे मैं ठीकरी समझूं मुझे ऐसी क़नायत हो॥
अगर शमशेरों पै कर नाज़ां हो उदू कोई।
तो मेरे नाज़ का बाइस मेरी सैफे सदाक़त हो॥

अगर कोई आशिके सादिक गिरफ़्तारे मुसीबत हो।
मेरी भी जिन्दगी में फ़र्ज इस्तक़बाल आफ़त हो ॥
करे रोशन महल्लों में कोई बिजली की कदां हो।
मुझे कुटिया में मिट्टी का दिया जलने से राहत हो ॥

भजन २२ ।

एक दिन तुमको पछिताना पड़ेगा ।
खाने को अन्न तक नहीं तुमको नसीब हो।
इस भांति हिन्दोस्तान ये सारा ग़रीब हो ॥
भूख से प्राण गंवाना पड़ेगा ॥ १ ॥
घी दूध के दर्शन तुम्हें होंगे न साहेबान ।
तुम जानते हो मिट चला गौमाता का निशान ॥
तेल मिट्टी का खाना पड़ेगा ॥ २ ॥
कपड़ा न पहनने को मिले रक्खो इसको याद ।
नंगे फिरोगे घूमते गलियों में मादर जात ॥
शर्म से मुंह ढुबकाना पड़ेगा ॥ ३ ॥
अब भी सम्हालो होश कुछ करके दिखावो तो।
मरती है गौ माता पुत्रो ! बचावो तो ॥
वरना स्यापा मनाना पड़ेगा ॥ ४ ॥
क्या कर सकोगे जबकि चिड़ियां चुग जांय खेत।
पहले से यत्न करलो क्यों बिन मौत प्राण देत ॥
हरिदत्त कहना बजाना पड़ेगा ॥ ५ ॥

भजन २३ ।

आग में पड़ कर भी सोने की दमक जाती नहीं ।
काट देने से भी हीरे की चमक जाती नहीं ॥
सिल पै घिस देने से भी जाती नहीं चन्दन की बू ।
फूल की मिट्टी में भी मिलकर महक जाती नहीं ॥
फूट कर आता नहीं कुछ लाल की रंगत में फर्क ।
तोड़ देने से भी मोती की चमक जाती नहीं ॥
रंज में आता नहीं नेकों की पेशानी पै बल ।
धूप की तेज़ी में सब्ज़ी की लहक जाती नहीं ॥
जा नहीं सकती कटहरों में शेरों की दहाड़ ।
दस्ते गुलची में भी गुन्चों की महक जातो नहीं ॥
ख़ौफ़ो ख़तरे में बदल सकती नहीं मर्दों की खूं ।
अंदलीबो की क़फ़स में भी चहक जाती नहीं ॥
साहबे हिम्मत नहीं दबना मुखालिफ़ से कभी ।
ज़ोर से आंधी के आतिश की भड़क जाती नहीं ॥
नाराज़ न रहता है आफ़ालो हवादस में दिलेर ।
बादलों में घिरके बिजली की कड़क जाती नहीं ॥
मुल्क की उल्फत का जलवा दिलसे मिट सकता नहीं ।
कौम की ख़िदमत की ख्वाहिश ऐ फ़लक जाती नहीं ॥

भगवान रामचन्द्र जी की प्रतिज्ञा ।

भजन २४ ।

बर्फ के टुकड़े अगर गर्मी से ढलना भूल जांय ।

आगसे गर मोम के टुकड़े पिंघलने भूल जांय ॥
मस्त भौंरे गर कंवल पर भिनभिनाना भूल जांय ॥
पर्वतों पर कोयलें तान लगाना भूल जांय ॥
राग पर बनके हिरन गर मस्त होना भूल जांय ।
बीन सुनकर सांप अपने होश रखना भूल जांय ॥
बोस्तानों में अगर गुन्चे चटकना भूल जांय ।
झाड़ियों में ख़ार दावन से उलझना भूल जांय ॥
वादिये कश्मीर में पत्थर लुढ़कना भूल जांय ।
रेत के ज़र्रे सुमेरु पर चमकना भूल जांय ॥
आस्मां पर चांद और सूरज निकलना भूल जांय ।
सरज़मी पै फूल खिलना नख़्ल फलना भूल जांय ॥
होंठ हंसना और रुख़सारे दमकना भूल जांय ।
कान सुनना दीदये मर्दम थिरकना भूल जांय ॥
सूरमा तलवार लेकर रण में बढ़ना भूल जांय ।
ब्रह्मचारी वेदपाठी वेद पढ़ना भूल जांय ॥
ईश भक्ति में मुनीश्वर महव रहना भूल जांय ।
आर्य भूमि पै गंगा यमुना बहना भूल जांय ॥
मैं पिता के हुक्म को लेकिन भुला सकता नहीं ।
अरको चौदह साल तक जंगलसे जा सकता नहीं ॥

जोशीली शैरें २५ ।

चुड़िया पहन निकाल के घूंघट न टर रहो ।
मरदानगी के साथ जीवो या कि मर रहो ॥

तुम माननीय स्वत्व सभी प्राप्त कर रहो।
इस में कोई दबाये तो तुम और उभर रहो॥
आयें बलायें जितनी पै सोना सिपर रहो।
हो जाय फांसी सत्य पर तत्पर मगर रहो॥
जो मुंह से कहो उस पै ही बांधे कमर रहो।
मौके पर खबरदार न हरगिज़ कतर रहो॥
हो मर्द तो मैदान में आकर उतर रहो।
बे डर रहो बे खौफ़ रहो बे खतर रहो॥
फिर फिर के भीख माँगते मत दर बदर रहो।
निज शक्ति के सहाय से सब प्राप्त कर रहो॥
निज मातृ भूमि के लिये चश्मे तर रहो।
उसके लिये हथेली पै ही सर रखे रहो॥
उसके ही ध्यान में सदा शामो सहर रहो।
कुछ इम्तहान पर न इधर और उधर रहो॥
बेकस की तरह तुम न फ़कत पेट पर रहो।
शेराना वार नीते रहो शेर नर रहो॥
तुम आर्य हो कदापि बहादुर न डर रहो।
कोई तुम्हें डराये मगर तुम निडर रहो॥

भजन २६

वही धन हैं जिन्हें धुन देश की दिल में समाई है।
है जिनका देश ही माता पिता भाई लुगाई है॥
जिन्हें परवाह न खाने की न पीने की न सुध तनकी।

जिन्होंने छोड़ घर, देश हित धूनो रमाई है ॥
सतावे लाख चाहे कोई पर उनको सदा सुख है।
जिन्हें आदर निरादर एकसा देता दिखाई है॥
रुलाती है जिन्हें नित देश बन्धुवों की गिरी हालत।
मदद उनकी करो प्यारे इसी ही में भलाई है॥

भजन २७ ।

देश रोता देखकर स्वामी का दिल मुर्झा गया।
ऐशो अशरत छोड़ दीनी ब्रह्मचर्य ले लिया॥
बाप छोड़ा मात छोड़ी दिल न नारी को दिया।
एक भारत वास्ते सब कुछ निछावर कर दिया॥
खोजते मुथरा भी पहुंचे सत्य अमृत को पिया।
हो अभय भ्रमण को धाये अब तो भारत है जिया॥
वेद विद्या को सुनाया ज्ञान से दिल भर लिया।
मूर्त्ति पूजन छुड़ाया ओ३म् का चर्चा किया॥
देश में भ्रमण लगाया एक भारत को किया।
एक पूरब एक पश्चिम एक उत्तर कर दिया॥
आर्य भाषा को सिखाया वेद अमृत सब पिया।
वेद वाणी सब पै बरसो इन्द्र जब तक था जिया॥
भाग्य भारत मन्द तेरे काल सब को खा गया।
छुप गये भारत सूरज भोग अप अपना किया॥

हा ऋषि सन्तान

भजन २८

ऋषियों की सन्तान क्या होगया ।
होश कर अपने दुख की कहानी तो सुन ॥
आज कैसी अविद्या निशा छा रही ।
तुम्हें कैसी छै मासी नींद आरही ॥
तेरी सुख सम्पत्ति सब लुटी जारही ।
देख क्या २ हुई तेरी हानी तो सुन ॥१॥
चौदह विद्या जटित जो मुकुट था तेरा ।
जिस में अनमोल हीरा था ब्रह्मचर्य्य का ॥
तुझ में थी जो कभी पूर्ण चौसठ कला ।
आज अपनी हुई वे बिगानी तो सुन ॥ २ ॥
नव निधि अष्टसिद्धि बताई तेरीं ।
सारी दुनियाँ में जो थी बड़ाई तेरी ॥
तेरे चरणों की रज जिनके माथे पड़ी ।
आज करते हैं वे तुझ से ग्लानि तो सुन ॥ ३
यज्ञों की मर्याद जाती रही ।
वर्ण आश्रम विधि दृष्टि आती नहीं ॥
आर्य वर्त्त देवों से ख़ाली हुवा ।
अब बना ये नरक की निशानी तो सुन ॥
बाम मारग ने आकर सताया तुझे ।

जैन बोद्धों ने भ्रम में फंसाया तुझे ॥
एक तरफ था इसाईयों से पाला पड़ा ।
इधर आ खड़ी मुसलमानी तो सुन ॥
कुमारिल ने आकर जागाया तुझे ।
स्वामी शंकर ने धीरज दिलाया तुझे ॥
फिर भी बासुदेव तू चेता नहीं ।
अब दयानन्द की शुद्ध वाणी तो सुन ॥ ६ ॥

❀ माताओं से प्रार्थना ❀

॥ भजन २६ ॥

लाज भारत की चली अबतो बचाओ देवियो ।
डूबने वाला है बेड़ा पार लाओ देवियों ॥
अब तलक इस देश की रक्षा तुम्हीं करती रहीं ।
पर नहीं,अब तुमभी कुछ ध्यान लावो देवियों ॥१॥
अब तलक सतशील की रक्षा तुम्हीं करती रहीं ।
आज फ़ैशन में उसे तुम क्यों गमावों देवियों ॥२॥
हो यदि कन्या बनो कृष्णा कुमारी की तरह ।
पितृ कुल और देश की लज्जा बचाबो देवियों ॥३॥
हो यदि स्त्री बनो दमयन्ती सीता की तरह ।
साथ दो अपने पति का प्रण निभाओ देवियों ॥४॥
हो यदि माता बनो जीजी बाई की तरह ।

अब शिवा प्रताप जैस पुत्र जावो देवियों ॥५॥
है विनय वसुदेव की माता हमें आशीश दो।
हम फलें फूलें हमें ये वर दिलावो देवियों ॥६॥

देवियों से अपील

॥ भजन ३० ॥

लुट रहा है देश तुम इस को बचालो देवियों।
दुश्मनों के हाथ से हमको बचालो देवियों॥
लूट कर सब धन विदेशी लेगये योरूप को।
बाकी जो कुछ है इसे अबतो बचालो देवियों॥
त्याग दो मलमल, चिकन, रेशम वो लट्ठा डोरिया।
गाछ छा धूप आली घर से निकालो देवियों॥
सूत कातो और बुनो खुद देश का सङ्कट हरो।
अपने सब गाढ़े के कपड़े अब बनालो देवियों॥
नाव भारतवर्ष की बहनो भंवर में है पड़ी।
कर कृपा इसको भंवर से तुम निकालो देवियों॥
तुम सती का रूप हो शक्ती तुम्हारा नाम है।
त्याग निद्रा शस्त्र अब अपना सम्हालो देवियों॥
काम जब जो कुछ किया संसार में तुमने किया।
भीष्म अर्जुन जैसी सन्तां फिर बनालो देवियों॥
शिक्षा दो बच्चों को बहनो तुम स्वदेश अनुराग की।
पाठ उनको बीरता का फिर पढ़ालो देवियों॥
देश के नेता हजारों तप रहे हैं जेल में।

त्याग ग़फ़लत को उठो उनको छुड़ालो देवियों ॥
क़ौमी ख़िदमत में हमें बहनों ज़रा इम्दाद दो।
वक्त है अब हाथ "गङ्गा" का बंटालो देवियों ॥

प्यारे सज्जनो! श्रीक्षत्रिय कुल भूषण महाराणा प्रताप का भाट जिस समय अकबर के दरबार में गया महाराणा की पगड़ी उसके सरपै थी सर झुका कर प्रणाम न करने पर अकबर ने उससे कहा, कि तुमने बड़ी गुस्ताख़ी की है कि जो सर झुका कर हमको प्रणाम नहीं किया ये शब्द सुनकर जोश से उसका हृदय उछलने लगा और दर्बारे आममें इस प्रकार कहने लगा।

ग़ज़ल ३१।

सर झुका दूंगा मगर पगड़ी झुका सकता नहीं।
क्योंकि प्रताप को बदनाम करा सकता नहीं ॥१॥
साफ़ कहता हूं सरें आम नहीं ख़ौफ़ मुझको।
उसको बेआबरू कर जान बचा सकता नहीं ॥२॥
काटलो मेरी ज़बां सूली चढ़ादो मुझको।
लेकिन इस पगड़ी को क़दमों में झुका सकता नहीं ॥३॥
उस बहादुर की मेरे सरपै धरी पगड़ी है।
जिसका सर कोई भी दुनियां में झुका सकता नहीं ॥४॥
क़ौमी गद्दार हैं जो साथ तेरे रहते हैं।
उनको ख़ातिर में ज़रा भी ला सकता नहीं ॥५॥

राजपूतों की रखी पगड़ी इसी पगड़ी ने ॥
"चन्द्र" अब दाग़ इसे कोई लगा सकता नहीं ॥६॥

महाराणा हमीर की माता

प्यारी बहनो तथा माताओ अब उठनेका समय आगया है माताओं को चाहिये कि वो बीर सन्तान पैदा कर मैदाने जंगके लिये अर्पण करदें आज देश व जातिके लिये बलिदान करने का समय है माताओ महाराणा हमीर की माता को देखो। जिस समय अलाउद्दीन अपनी फौजों को लेकर समर भूमि में आ डटा राणा भी अपनी सेना को सजा कर अपनी माता से मिलने गये, माता किस तरह उसके हौसले को बढ़ाती है।

नरेन्द्र सिंह

ग़ज़ल ३२।

आज जा रण में जाकर धूम मचादे बेटा।
ख़ौफ़ से दुश्मनों के दिल को हिलादे बेटा ॥१॥
तीर पर तीर खाकर आगेको बढते जाना।
अपने सीने को तू छलनी बनादे बेटा ॥२॥
जे़बा देता नहीं है तुमको लिबासे सादा।
ख़ूने दुश्मन का इस पर रंग चढ़ादे बेटा ॥३॥
ढेर लहाशों का उस मैदान में ऐसा करना।
स्वर्ग के वास्ते जो सीढ़ी बनादे बेटा ॥४॥
जिस तरह बस्तियों की बू को उड़ादे वायू।

फौज दुश्मन को ऐसे जाके उड़ादे बेटा ॥५॥
जिस तरह जङ्गलों म बिजली गिरा करती है।
फौज दुश्मन कीं ऐसे जाके उड़ादे बेटा ॥६॥
गोद में पाला था बस वास्ते इसही दिन के।
शीरे मादर की कुछ तौसीफ़ बढ़ादे बेटा ॥७॥
"चन्द्र" सत धर्म जाति देश के ऊपर मरना।
पहले खुद मरके तू औरों को बतादे बेटा ॥८॥

****** सर्मे आन नहीं वो इन्सान नहीं हमारे पुरुषा अपने
* जि * प्राणोंको आनपरदेदेते थे परन्तु अपनी आन और
* * मान की रक्षा करते थे आज हम तुच्छ २ वस्तुओं
****** पर अपनी मान मर्याद को गवां बैठते हैं जब तक इस भारत वर्ष में मानी पुरुष पैदा न होगें तब तक कभी भी भारत माता का उद्धार न होगा भगवन हमें सुबुद्धि दो जिस से हम अपने मान और गौरव की रक्षा करें।

नरेन्द्रसिंह

गज़ल ॥ ३३ ॥

सर्व मिट जाय मगर एक बनी आन रहे।
धर्म दुनियां में रहे जान रहे या न रहे ॥ १ ॥
धर्म के वास्ते सर्वस्व करेगें अर्पण।
जीव भी जिस्म में महमान रहे या न रहे ॥ २ ॥
बचन जो मुखसे कहें करके दिखादें पूरा।
ऐसी हालत में भी श्रीमान रहे या न रहे ॥ ३ ॥

ऐसे पुरुषोंका भला दुनियांमें जीना क्या है।
जो कहते हैं रोटी मिले शान रहे या न रहे ॥४॥

वीराङ्गना कुन्ती का पुत्र।

प्यारी बहनो व भ्रातओं जिस समय वीराङ्गना कुन्ती अपने पांचों पुत्रों को लेकर चक्रा नामक नगरी में एक ब्राह्मण के गृहमें निवास करती थी अचानक एक रोज़ ब्राह्मणके गृह में से किसी के रोने की आवाज सुनाई पड़ी कुन्ती जाकर देखती है कि ब्राह्मणी अपने गृहको लीपती जाती है और आंखों से अश्रुपात कर रही है कुन्ती पूछती है कि माता आप के ऊपर क्या विपत्ति है मैं आप की विपत्ति को दूर करने का अवश्य यत्न करूंगी ब्राह्मणी ने कहा कि इस नगरी में नित्य एक दाना आता है और एक मनुष्य की भेट लेता है आज मेरी वारी है और एक ही मेरे पुत्र है वो ही सदाके लिए जुदा होता है बस यही मेरे रोनेका कारण है ये सुन कुन्ती धैर्य देकर कहती है।

नरेन्द्रसिह

ख़याल ॥ ३४ ॥

धीरज धर घबड़ा मत बहना तेरा कष्ट मिटाऊंगी।
तेरे सुतके बदले अपना सुत दानेकी भेट चढाऊंगी॥
तेरा प्यारा इकलौता पुत्र दाने से मारा जायेगा।
ये महा कष्ट होगा सुतका तुमसे न सहारा जायेगा॥
हैं पाँच पुत्र मेरे योधा गर उनमें से एक गया मारा।
फिर भी तो चार रह जायेंगे तेरा सुत इकलौता प्यारा॥

मत रुदन करे सुत अपने को छातीसे लगा समझाती हूं !
दानेकी भेट में जायेगा अभी भीम बलीको बुलाती हूं ।
दो०–भली भांति समझाय कर पर हित चित में धार ।
कुन्ती पहुंची भीम पर ज़रा न कीन्ही वार ॥
कवित्त–अरे बेटा भींम बली नित इस नगरी से ।
आदमीका भक्षण करने दाना एक आता है ॥
जिसके घर रह कर हम तुमने आराम किया ।
उसका रुदन सुनकर जिगर मेरा थर्राता है ॥
उसकी है वारी भीतर रो रही जो नारी आज ।
भेट इसका इकलौता पुत्र जाता है ॥
कहे हरिदत्त बेटा दानेके निकाल प्राण ।
क्यों ना इस नगरी को निर्भय बनाता है ॥

भजन न० ३५

जाओ पर कारजके हेत बेटा भीम बलि बलधारी ॥
कवित्त–धन्य बेटा जन्म उसका दूसरोंके काम आये ।
मरता और जीता पराये उपकार में
राम काज हेत हनुमान सिन्धु पार गये ।
रावण मार लंकाको विभीषण अधिकारमें ॥
मिलते हैं अनेक उदाहरण पूर्व पुरुषों के ।
शिवि ने तन काट दिया कबूतरके प्यार में ॥
मसल है मशहूर दूसरोंकी भलाईके लिये ।
तभी पुत्र प्यारे जन्म धारे हैं संसार में ॥

बेटा भीम करो न देर=जावो करमें ले शमशेर।
मार दानेका करदो ढेर निर्भय बसे यह नगरी सारी
कवित्त—इतना हुक्म पाते ही पवन पुत्र गर्ज उठा।
साथ ले सामान सारा भेंटमें जाने लगे॥
अच्छेर माल आज खानेको मिलेंगे खूब।
उसी धुनमें मस्त दौड़ लम्बी लगाने लगे॥
पहुंचे वहां भीम जहां दाना नित आता था।
आगे रख पदार्थ बड़ी खुशीसे उड़ाने लगे॥
पेट भर खाया भेट दाने को जो लाये थे।
होके निश्चिन्त गदा हाथमें उठाने लगे॥
इतने में दाना पहुंचा आय-भीमको देख गया चकराय।
वलिने बलकर गदा उठाय-ज़ोरसे सींने पै फटकारी॥२॥
कवित्त—गदाके लगते ही दाना चिंघाड़ उठा।
दौड़ा मुंह फाड वलि भीमके चबाने को॥
सम्हर गदा धारी ने गदा का प्रहार किया।
होश नहीं आने दिया एक वार दाने को॥
मार २ भीम ने ज़मीन पै पछाड दिया।
प्राण विन निकाले नहीं छोडा उस दिवाने को॥
मरे हुवे दाने को नगरी के दर्वाजे पर।
कर दिया खडा सब शहर के दिखाने को॥
काट दानेके नाक और कान चलदिये भीम बली बलवान।
कहा मातासे इस विधि आन-लोआज्ञा पूरण हुई तुम्हारी ३

कवित्त-भीमका कर्तव्य देख कुन्ती प्रफुल्लित हुई ।
पीठ ठोक बली भीम छाती से लगाये हैं ॥
प्रातः काल दाने का नगरी के दर्वाजे पर ।
मुर्दा पडा शहर के लोग घबडाये हैं ॥
अरे ऐसा बली दाने को मार दिया ।
नगरी पर एहसान किया मरने से बचाये हैं ॥
कहे हरिदत्त ऐसे एक।अनेक योधा ।
इन भारत की देवियों ने जाये हैं ॥
अबतो हो मुर्दा सन्तान-जिनमें नहीं देश अभिमान
तोड़े जी हजू.र की तान—जिनको लगे गुलामी प्यारी ४

पति परायणा दुर्गा देवी

वार्ता

प्यारी बहनो स्त्रियों के लिये पाति व्रत्य ही परम भूषण है इसी में स्त्रियों की गति है। प्राचीन काल में कैसी २ पतिव्रता स्त्रियें हो चुकी हैं जिन्होंने अपने प्राणों की परवाह न कर के अपने प्यारे पवित्र पतिव्रत धर्म की रक्षा की है महाराज जय. पुर की बेटी दुर्गा देवी का सौंदर्य सारे भारत वर्ष में विख्यात था दुर्गाका विवाह महाराज बूंदीसे बडी धूम धामसे हो चुका कुछ दिन पश्चात् दुर्गा की छोटी बहन का विवाह था दुर्गावती भी बूंदि से आई अलग डेरा लगवाकर ठहरी दुर्गावती की बहनको विवाहने वाला राजपूत अमरसिंह था विवाह रात्रिको निर्विघ्न समाप्त होगया प्रातः काल अमरसिंह दुर्गावती के रूप

की प्रशंसा सुन कर दुर्गावती के डेरे में जा पहुंचा दुर्गावती नम्रता पूर्वक नमस्ते करके पूछने लगी कहिये महाराज किस लिये कष्ट सहन किया है अमरसिंह बोला ज़रा आगे बढ़ कर बात कीजिये

(इति)

दोहा-ज्योंही दुर्गाने धरे दोनों कदम अगार ।

झटपट अमर सिंहने हाथ हाथ में मार ॥

कबित्त-हाथका लगना मानो बिजली सी टूट पड़ी ।

गर्ज कर सिंहनी ने खींच ली कटार है ॥

नैना विशाल, मानो ओड़दी मशाल ।

क्रोध न सम्हाल सकी बोली वो धिक्कार है ॥

अरे दुष्ट पापी दुरा चारी ठहर जरा ।

मौत तेरी आई कोई क्षण की अबार है ॥

बूंदी की आबरू पति व्रत धर्म मेरा ।

नष्ट कर हरिदत्त जीते रहना दुश्वार है ॥

दो०—इतने में हीं मचगया महलों में कोहराम ।

नर नारी चहुं ओर से होगये जमा तमाम ॥

समझायें समझे नहीं भबक रहा सबगात ।

माता ने झट दौड़ कर पकड़े दोनों हाथ ॥

गज़ल ३६

कहा माताने अयबेटी ज़रा तो धीर धर मन में ।

शान्ति कर जल्दी है, क्रोध की अग्नि तेरे तनमें ॥

है इसका पाप इस काबिल सज़ा भी चाहे जितनी दो ।
मगर लघु तेरी बहन रो रही है बैठी महलन में ॥
रहम कर छोड़दे इसको न मारो इस समय बेटी ।
रड़ापा दे न प्यारी बहनको बालयपन में ॥
ध्यान उसकी तरफ देना हुई है रातही शादी ।
सभा मंडपके आगे बंध गई है उसके बचनन में ॥
कहा ले मान कर अहसान इसको छोड़दे प्यारी ।
खुदही मर जायगा बंधके तेरे अहसाँके बन्धन में ॥
सुनके उपदेश माताके न शान्ति और सबर आया ।
कहे हरिदत्त बोली रुक नहीं सकती अब क्षण में ॥

बहरे तवील । ३७

तेरे कहनेसे माता इसे छोड़ती ।
क्रोध जाता है मुझसे हटाया नहीं ॥
क्यों किसी दुष्ट ने दुष्टता पै कमर ।
दण्ड उसका ज़रा इसने पाया नहीं ॥ १ ॥
अधिक दण्ड चाहिये था मिलना इसे ।
किसी और सतीको सतावेगा ये ॥
अब करूं क्या हूं परवश कुछ चलता न वश ।
हुक्म माताका जाता भुलाया नहीं ॥ २ ॥
मेरे हाथको पापीने छूई दिया ।
रहा सेवाके लायक पतिकी नहीं ।
इतना कहकर खञ्जर उठाया सितम ।

झट उड़ाया विलम्ब लगाया नहीं ॥ ३ ॥
जिरमसे झट हाथको अलग कर दिया ।
नहीं कम्पाया दहलाया किञ्चित हिया ॥
दृढताई दिखाई घबराई न वो ।
क्षत्री वंशको दाग़ लगाया नहीं ॥ ४ ॥
धन्य दुर्गावतीसी कहां है सती ।
धर्म समझा पतिव्रत पाई गति ॥
पूज्य समझा था केवल सतिने पति ।
कभी कब्रोंको शीश झुकाया नहीं ॥५॥
आज भारतकी नारी गज़ब ये करें ।
पीर सैयद् पैं मेवा मिठाई धरें ॥
कहे हरिदत्त घरमें पतिसे लड़ें ।
सच्चा पतिव्रत धर्म निभाया नहीं ॥ ६ ॥

पतिव्रत धर्मही स्त्री का सर्वस्व है ।

भजन न० ३८

पति बिन सूना सब संसार ॥

पति ही से पत है या तनकी पति पत राखन हार ।
जब तक पति है तब लगि पत है विन पति विपत हज़ार॥
जाको प्रेम चरण में पतिके धन्य वही है नार॥
एक पतिव्रत राखे नार तो सब व्रत हैं बेकार ।
विना पतिव्रत राखे नारीका जीवन है धिक्कार ॥

जसवन्तसिंहकी रानीका अपनें पतिको उत्तर

वहरे तवील ३६

बन्द फाटक किलेके करा दीजिये।
रणसे भागा हुआ बढ़ने पावे नहीं।
ऐसे कायर पतिका न देखूंगी मूँह।
कह दो आकर मुझे मुंह दिखावे नहीं॥
युद्ध भूमिमें दुश्मनको मारे मरे।
झण्डा लेकर फ़तेका किलेमें बढ़े॥
वरना आकर न हमको कलंकित करें।
अपनी इज़्ज़तमें बट्टा लगावे नहीं॥
क़दम क्षत्रिय समर से जो पीछे धरे।
यहां अपकीर्ति आगे नरक में पड़े॥
अपमानितका जीना मरने से परे।
प्राण देकर पग पीछे हटावे नहीं॥
हाय तक़दीर मेरी फूट गई।
ऐसे क़ायर पतिसे हैं फेरे पड़े
अपनी करनीको खुद ही भोगेगा वो।
राजगद्दीको आकर लजावे नहीं॥
हिन्द माता का उद्धार होगा तभी।
जन्म लेंगी यहां ऐसी देवी कभी॥
प्राण देने को तैय्यार होंगी सभी।
झण्डा इंगलैण्ड का फिर फरांवे नहीं।

मरी माता वो अपने पति पुत्रों से ॥
कह दो आया समय पग न पीछे धरो ।
मातृ भूमि पै जीवन निछावर करो ॥
और हरिदत्त को कुछ सुहावे नहीं ।

बदरस्म दहेज और कुमारी स्नेहलता ।

कवित ४०

बाबू हीरेन्द्र चन्द मुकर्जी धर्मज्ञ पुरुष ।
उनकी प्रिय पुत्री स्नेह लता कुमारी है ॥
विदुषी सुशील सत्य शुभ गुण सम्पन्न ।
धार्मिकता में माता पिताको अधिक प्यारी है ॥
इस समय आयू पन्द्रह वर्ष कई मास की है ।
शादी के योग पर करे क्या लाचारी हैं ॥
कहे हरिदत्त इस दहेज बद रसम ने ।
लाखों मासूम कन्याओं की जान मारी है ॥

बा बूजी कलकत्ते के रहने वाले हैं स्नेहलता इन की प्यारी पुत्री है जब शादी के योग्य हुई तो साथ २ माता पिता को विवाह की चिन्ता हुई कि स्नेह लताको योग्य वर मिले जिस लड़के वालेसे बात कहते हैं वही ज्यादा दहेज मांगताहैं इनकी साम्पत्तिक अवस्था बहुत कमजोर है कहां से दहेज दें लाचार हो एक ब्राह्मण से दो हजार का वायदा कर सम्बन्ध निश्चय कर दिया अब रुपये की फिकर पड़ी स्त्री ने पूछा प्राणनाथ इतना रुपया कहां से दोगे बस

यह शब्द सुनते ही बाबू हीरेन्द्र के आंसू भर आये और फूट २ कर रोने लगे किन्तु धैर्य धरके कहा प्राण प्यारी और कुछ नहीं तो मकान बेचकर पुत्री की शादी करूंगा ये विचार आते ही दोनों स्त्री पुरुष पुनः रोने लगे कि हा अब तो रहनेके लिये भी ठौर नहीं रहेगा। ये आपस की दोनों स्त्री पुरुषों की बात चीत स्नेहलता सुन रही थी।

ख़याल ४१

सुनती थी खड़ी स्नेहलता कुछ बालक नहीं होशयार थी वो।
विदुषी सुशीलधार्मिक माता और पिताकी आज्ञा करथी वो॥
नहीं सहा गया क्लेश उनका हृदय में चोट लगी भारी।
मेरे जीवन से दुखी अधिक हैं आज पिता और महतारी॥
सैकड़ों देश के हित मरते भारत के नव यौवन धारी।
चल तू भी आहुति दे शिक्षा पावें जिस से नर नारी॥
ज्यों त्यों काटी हरिदस रात उठ प्रातः काल श्रृङ्गार किया।
एक पत्र लिखा इस मजमून का पढते ही हिल जाय हिया॥

स्नेहलता का पत्र पिता के नाम।

बहरे तवील ४२

मेरे कारण दुखी न हो इतने पिता।
यह दुख मुझ से होता गवारा नहीं॥
प्रणाम है अन्तिम चरणों में मेरा।
कुछ ग़मो रंज करना हमारा नहीं॥ १॥

पालन पोषण में तुमने सहे दुख अधिक ।
जिनके लिखने और कहनेमें असमर्थ हूं मैं ॥
अपने सुख के लिये अब पिता माता जी ।
गृह बिकवाना चाहती तुम्हारा नहीं ॥ २ ॥
मेरी करदोगी शादी गृह बेच कर ।
एक छोटी बहन और बाक़ी रही ॥
उसको व्याहोगे कैसे बतावो पिता ।
यह कुछ दिल में तुम ने विचारा नहीं ॥ ३ ॥
तुमने प्रेम किया उसका बदला यह दूं ।
घर बिकवाके दर २ फिराऊं तुम्हें ॥
ऐसे जीने पै लानत है प्यारे पिता ।
जिससे तुमको मिला कुछ सहारा नहीं ॥ ४ ॥
शब्द माता से तुमने जो रात कहे ।
वो जाते नहीं हैं मुझसे सहे ॥
हाय सर्वस्व हो चुका नष्ट मेरा ।
इस संसार में अब गुजारा नहीं ॥ ५ ॥
अपराध करना सभी मेरे क्षमा ।
अब जुदा होती तुमसे स्नेह लता ॥
करती कर्तव्य अपना पालन पिता ।
कुछ नया धर्म पुत्री ने धारा नहीं ॥ ६ ॥
इतना कह तेल मिट्टी से कपड़े छिड़क ।
लगा दीया सलाई भसम होगई ॥
धन्य भारत देवी स्नेह लता ।

आर्य जाति का मान बिसारा नहीं ॥ ७ ॥
हिन्दू जाति तेरा कैसे होगा भला ।
तेरी कन्यायें मरती हैं जिस्म जला ॥
कहे हरिदत्त लाखों के काटे गला ।
क्या विधवाओं का सुनते हो नारा नहीं ॥ ८ ॥

सज्जन पुरुषो जिस समय अपने प्राचीन गौरव तथा सभ्यताकी याद आती है और वर्तमान दशाका अवलोकन करते हैं तो आंखों से अश्रूपात होता है पाश्चात्य सभ्यताभिमानी जो ये दावा करतेहैं, कि इस आर्य्या वर्त्तदेशमें हमने ही सभ्यताका प्रसार किया । क्या वो अपनी आंखोंसे पक्षपातका पर्दा उठा कर ये नहीं देख सकते कि इस पवित्र देशमें अब कितना दुराचार और अत्याचारका बाज़ार गरम है । देखिये राजा अश्वपति, ऋषियोंसे क्या कहते हैं

नरेन्द्रसिंह

भजन न० ४३

भारतमें कैसे हुए महिपाल ।

छान्दोग्यउपनिषद में पढलो अश्व पतिका हाल ॥
उद्दालक आदि ऋषि आये–राजाने कर सत्कार टिकाये ।
विष्टर अर्घ पाद पहुंचाये—हाथ जोड़कर करी नमस्ते ॥
भोजन का किया कवाल । भारत० १ ॥
ब्रह्म ऋषि ऐसे फर्माते–राजाका नहीं भोजन खाते ।

भ्रष्ट अन्नसे मन गिर जाते-इस लिये राजन हमारे भोजन
का मत करो खयाल। भारत० २॥

दो०-अश्वपति कहने लगे हो आनन्द प्रसन्न-
स्वीकार क्यों करते नहीं भगवन मेरा अन्न „

नमे स्तेनो, जनपदेन कदर्यो न मद्यपः।
नाना हिताग्निर्नो विद्वन्नस्वैरी स्वैरिणी कुतः॥

मेरे राजमें चोर नहीं है—दुराचारका ज़ोर नहीं है।
कृपण धनी धन जोड़ नहीं है—शराब आदि नशों का
करने वाला नहीं दयाल। भारत ३॥

जो कोई अग्नि होत्र न करता—मेरे राजमें पग नहीं धरता।
विद्या हीन दण्ड नित भरता—इल्मो हुनरसे राज मेरेका
है बुलन्द इकबाल। भारत० ४॥

मेरे राजमें ज़ार नहीं है-तभी जारणी नार नहीं है।
क्यों भोजन स्वीकार नहीं है—अधर्मी राजाका हर्गिज़
नहीं खाना चाहिये माल। भारत० ५॥

इस प्रकार था राष्ट्र हमारा-आनन्दमय उन्नतिका द्वारा।
दुराचार दुर्व्यसन से न्यारा-कहे हरिदत्त अब फंसा है भारत
दुराचार के जाल। भारत० ६॥

वर्तमान भारत।

भजन न० ४४

भारत भूमि में दुराचार-दिनपर दिन बढता जाता है।
कबित्त—चार लाख बहत्तर हजार नौ सो चौरानवे

मर्दुम शुमारी से यहां रन्डी गिनी जाती हैं ॥
गणना उन्हीं को जिन्होंने पेशा लिखवाया है ।
छुप छुपके धर्म जाने कितनी गंवातीं है ॥
बासट करोड चौरासी लाख कई हजार सालाना।
भारत का कमाया धन धूल में मिलाती हैं ।॥
इतना ही नहीं बल्कि आतशक सुजाकसे ।
नस्ल दर नस्ल तक इनको सडी जाती है ॥
एक कलकत्ते का किया शुमार रंडी दो सो चौदह हज़ार
इसी तरहहरशहरकाबाज़ार खचा खच भरा नज़र आताहै
पा करके ताडी मस्त आंखे चढाते हैं ।
अफीम दो करोड दस लाख और सत्तर हज़ार !
सात सो पांच की सालाना मंगाते हैं ॥
गांजा भङ्ग चर्स का भी खर्च दो करोड़ का है ।
और कोकीन आदिको नहीं हम गिनाते हैं ॥
जुआ चोरी जारी पाप छुप २ के अनेक होत ।
जिनका हाल जनाने में हम भी चकराते हैं ॥
सुनिये आगे और जनाब-पीते दश करोड की शराब ।
लगाया सालाना का हिसाब ऐसे गज़ब हिन्द ढाता है २
कवित्त···-आमदनी इनकी नित्य फी कस आठ पाई है ।
खर्च इनका देख २ हिया फटा जाता है॥
डेढ अरब सालाना भारत का निवासी जन ।

तम्बाकू नोशी से अग्नि में जलाता है ॥
अब सन्तोष कुछ इतने पर भी करते नहीं ।
कई करोड सालकी सिगरट मंगवाता है ॥
भूके भारतवासी कुली बनके विदेश जाँय ।
पर ये कमाया धन धूलमें मिलाता है ॥
सोचो समझो करो बिचार-भारत बहुत हो चुका ख्वार।
सहते भूख प्यास की मार-इसका दम निकला जाता है।३
कवित्त-नशो का खर्च हमने वोही गिनवाया है ।
जो ठेको के ज़रिये जाता सरकार में ॥
जिसका मीज़ान सोलह करोड अट्ठाईस लाख ।
सात सो चालीस आया सालाना शुमार में ॥
बेचने वाले नफ़ा कितना उठाते हैं ।
इसका अन्दाजा नहीं हमारे अख्त्यार में॥
इकतोस करोड जिनमें वीस करोड मांसा हारी ।
जिनके सदाचार की धूम थी संसार में ॥
इस विधि ऋषियों की सन्तान तेरा कैसे हो गुजरान ।
कथके जल्से के दरम्यान छुन्द हरिदत्त नया गाता है ४

प्राचीन शिक्षा का नमूना

जिस समय भारतवर्षमें प्राचीन शिक्षा प्रणाली प्रचलितथी गुरुकुल पाठ शालाओंमें संस्कृत विद्याका अध्ययन होताथा उस समय देशमें परस्पर प्रेम सदाचारकी कमी न थी जबसे हमने उस पवित्र संस्कृत विद्या को छोड़ा और इस राक्षसी भाषा से स्नेह जोडा तब से आपस में ईर्षा द्वेष हिर्स हविष और नफ़रत का बाज़ार गरम होगया महर्षी १०८—स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आकर हमें आदेश दिया कि अय भारत के रहने वालो छोडो इस गुलाम बनाने वाली भाषाको पढो अपनो पवित्र वेद विद्याको अस्तु जब तक देशमें प्राचीन पद्धति के अनुसार शिक्षा प्रणाली न होगी कदापि सुधार न होगा प्राचीन शिक्षा प्रणाली का एक दृश्य आप के सामने है जिस समय सुदामा और श्रीकृष्ण जी एक गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त कर चुके श्रीकृष्ण जी द्वारिकापुर में सिंहासनारूढ हुवे और निर्धन सुदामा अपनी टूटी फूटी झौपडी में निवास करने लगे खाने पीने को कुछ सामान नहीं है मुफलसी क्या कुछ नहीं करती सुदामाकी स्त्री सुदामा से कहती है कि महाराज जावो कहीं से कछ धन उपार्जन कर लाओ ऐसे कैसे दिन कटेगें।

कुं० नरेन्द्र सिंह

ग़ज़ल नं० ४५ ।

एक दिन उसने कहा अय साहबे बगैंनवा
घरमें लोटा है न थाली है परात और न तवा ॥
आपके होते हुवे घरमें नहीं ये जेबा ।
क्या तुम्हारे राजमें इसको न है कोई दवा ॥
चुनरी है न रुपट्टा है न साड़ी सर पर ।
झूंठा सच्चा न कोई गोटा किनारी सर पर ॥
होगये परदये नामोशके टुकड़े टुकडे ।
किस तरह रक्खूं हया हाथ मैं सुकड़े सुकडे ॥
मर्द के होते हुवे जो औरतका न श्रृंगार बना ।
क्या बनाख़ाक बना कुछ न बना ख़ाक बना ॥

दूसरी तर्ज़ ।

द्वारिका पुरको जावो स्वामिन वहाँ द्वारिका धीश रहते हैं।
जग मशहूर नाम है उनका श्रीकृष्णजी कहते हैं ॥
योगी राजसे मिल करके सब अपने कष्ट सुना देना ।
यदि ग़ौर करें नहीं कहने पर तो पिछली याद दिला देना॥

ग़ज़ल ४६ ।

दिलमें घबराये बहुत राम कहानी सुनकर ।
ज़ाहिर करते ज़ुबां लब पै रुकी जाती है ॥
मांगनेसे तो प्रिया अपनी हवा जाती है ।
आब मोतीकी गई फिरसे नहीं आती है ॥

मांगना है ये बुरा किस से मैं मांगूं जाकर ।
सुनके बातों को तेरी आत्मा घबराती है ॥
मांग जो सरपै तेरे मांग तो क्या देती है ।
मांग बिखरे हुवे बालों को बंधा देती है ॥
मैंने ईश्वर के सिवा और से मांगा है नहीं ।
जाना घर कृष्ण के मुझ को शरम आती है ॥

वार्त्ता

गरीबी सब कुछ कराती है सुदामा भगवान श्री कृष्ण के पास जाते हैं और डोढो पर जाकर पहरे वालों से कहते हैं कि जावो कृष्ण जी को खबर करदो कि तुम्हारे मित्र सुदामा आये हैं पहरे वाले जाकर कहते हैं (सुदामा) नाम सुनते ही कृष्ण जी प्रेम से विह्वल होगये और कहा कि शीघ्र लिवा लावो सुदामा आते हैं दोनों गले लगते हैं ।

कव्वाली न० ४७

आया है जब निर्धन ब्राह्मण कृष्ण के दर्बार में ।
वस्ले गुल बुल बुल को हासिल होगया गुलज़ार में ॥
होके नंगे मिस्ल मजनू छोड़ शाही तख्त को ।
ड्योढी पै जाके चिपट बैठे इस जिस्में यारमें ॥
फार गुल तहसोल होकर किस जगह रहते रहे ।
रोज़ शब बेकल रहा मैं आपके इन्त ज़ार में ॥
जेव तन कपडा नहीं क्यों जिस्म लागिर होगया॥

हैफ़ ऐसे फंस गये हा पांजाये अदबार में ॥
ला बिठाया तख्त पै अपने बराबर मित्र को।
है ख़सूसियत येही तो सच्चे लुत्फो प्यार में ॥
यानी पटरानो के लाने में हुई कुछ पल की देर।
अश्के उल्फत आगये फौरन ही चश्मे ज़ारमें ॥
आप अपने अश्कसे धोने लगे खुद पाये दोस्त।
ऐसे फांसे जा चुके हैं महोब्बत के तार में ॥
पांव के कांटे निकाले उनके श्री कृष्ण ने।
करके आते हैं जिगर के टुकड़े खूं की धार में ॥
हर तरह ख़ातिर तवाज़ा कृष्ण जी करते रहे।
चन्द्र ऐसे दोस्त अब उन के हुवे संसार में ॥

कवित्त न० ४८

ऐसे विहाल त्रिबाइन ते भये,
कंटक जाल लगे पग जोये।
आहे सखा तुम पायो महा दुख,
आये इतैन किते दिन खोये ॥
देख सुदामा की दीन दशा,
करुणा करके करुणानिधि रोये।
पानी परात को पैर छुवो नहीं,
नैनन के जल से पग धोये ॥

एक विधवा का अपने पति की ल्हाश पर विलाप।

भजन नं० ४६

किस जनम का ये बदला लिया आपने।
प्राण प्यारे मुझे कुछ बता तो सही॥
आंख खोलो ज़रा देखो मेरी तरफ।
टुक ज़बां अपनी इक बार हिला तो सही॥ १॥
किस तरह से कटेगी यह बाली उमर।
कोई इसका उपाय बता तो सही॥
क्या अधर में ही डोवोगे किश्ती मेरी।
इक किनारे पै इस को लगा तो सही॥२॥
जो जो वादे किये थे विवाह के समय।
ज़रा उनको दोबारा दुहरा तो सही॥
मैने देखा ही क्या था तुम्हारे सिवा।
जो किया था प्रण अब निभा तो सही॥३॥
छोड़े जाते हो मुझ पर कहां पर बलम्।
पास अपने मुझे भी बुला तो सही॥
यूं न दर २ लाओ सताओ पिया।
मेरी मिट्टी ठिकाने लगा तो सही॥ ४॥
क्या खता मेरी दो दिन में ही देखली।
यह भरम मेरे दिल से मिटा तो सही॥
मुझे छोड़ो न तनहा खुदा के लिये।

कुछ मेरे हाल पै रहम खा तो सही ॥ ५ ॥

किस ज़ुबां रस भरी से बुलाते मुझे।
ज़रा इक बार मुझे फिर बुला तो सही ॥
सारे वस्त्र वो भूषण यहीं पै पड़े।
अपने हाथों से मुझको पहना तो सही ॥६॥
ऐसा पत्थर का हृदा भी क्यों कर लिया।
मेरे रोने पै कुछ तरस खा तो सही ॥
रोती रोती के कांटे गले में पड़े।
घूंट पानी का मुझको पिला तो सही ॥ ७ ॥
छोड़ा किसके सहारे यहां पै मुझे।
नाम उसका मुझे भी बता तो सही ॥
हा ? ये सूरत उमर दीखेगी नहीं।
एक बार अपना मुखड़ा दिखा तो सही ॥८॥
ऐसी करली है मेरे से क्यों बेरुखी।
ज़रा गर्दन को ऊपर उठा तो सही ॥
मैं तो हारी जगा करके यशवन्त सिंह।
अब ज़रा तू ही आकर जगा तो सही ॥ ८ ॥
बद क़िस्मत विधवा की चन्द आहें।

भजन न० ५०

यह आह मेरी गज़ब है भारत न मार मुझको सता २ कर
बिगाड़ देवे न फिर से ईश्वर ये कौम तेरी बना २ कर ॥
मैं साफ़ कहती हूं याद रखना जो आहें इस दिलसे उठ रहीं हैं

मिटा के छोड़ेगी कौम तुझको चिराग़ तेरा बुझा २ कर ॥
पहाड़ दिन रंजो ग़म में गुज़रा सितारे गिन गिनके रात काटी
मेरे सितारों ने मुझको मारा बुरी तरह से रुला २ कर ॥
ये नयन फूटें जो मेरे नयनों में एक पल भर भी नींद आई
बहाई नदियां बनाये कुलज़म लहू के आंसू बहा बहा कर ॥
लुटा है जब से सुहाग मेरा या सो हरमाँ का दिल में डेरा
मैं जान अपनी खो ही डालूंगी सोज़ोग़म में घुला २ कर ॥
वह तनसे ज़ालिम की फ़लक़का मेरे अरूसी-जोड़ा उतार देना
तलख़ कर दिये होश मुझ पर सुफैद चादर उढ़ा उढ़ा कर ॥
वसन्त जाने को और बहनें वसन्ती कपड़े रंगा रहीं हैं
दुखों ने चेहरे पै फेरी ज़रदी है खून अपना सुखा २ कर ॥
जो सावन आया तो झूलें झूल मल्हार गावें वो देशी ढोला
इधर किया मुझ को नीम बिस्मिल ग़मों ने चिरके लगा २ कर
वो मुझ पर आफत का टूट पड़ना वो बालेपन का मेरा रडांपा ।
जलाया जिस ने मेरी उम्मैदों को ग़म की बिजली बना २ कर
न मुझको अपने अज़ीज जाने पराये देते हैं लाख ताने
किया ज़माने ने मुझको रुसवा हजार तोहमत लगा२ कर ॥

स्वदेशी की क़सम !

ग़ज़ल न० ५१ ।

स्वदेशी वस्तू लेने की क़सम खाओ तो अच्छा है ।
देख भारतकी हालत को रहम लाओ तो अच्छा है ॥

सुहाती है नहीं मुझको विदेशी सिल्क चाइना की।
बने जो देश में अपने वही सब माल अच्छा है॥
पहन सकता नहीं हरगिज़ कमीज़ें मैनेचिष्टर की।
स्वदेशी गाढे का कुरता हमारा बहुत अच्छा है॥
करूं क्या आज लेकर मैं दुशाला देश जर्मन का।
मेरा कशमीर का मित्रों स्वदेशी शाल अच्छा है॥
झिड़क कर कह दो उनसे तुम विदेशी जिनको भाता है।
तुम्हारा देश भारत से किनारा करना अच्छा है॥
स्वदेशी वस्तुएं बर्तो सदा भारत की जय बोलो।
करो सूचित हर एक नरको स्वदेशी माल अच्छा है॥

नालये बुलबुल ग़ज़ल न०५२।

१

दे दे मुझे तू ज़ालिम मेरा ये आशियाना।
आराम गाह मेरी मेरा बहिश्त [ख़ाना॥

२

देकर मुझे भुलावा घर बार छीन कर तू।
उसको बना रहा है मेरा ही कैद ख़ाना॥

३

उसके ही खाके टुकड़े बद ख्वाह बन गया तू।
मुफ़लिस समझके जिसने दिलवाया आबो दाना॥

४

महर्वां बना तू जिसका जिससे पनाह पाई।
अब कर दिया उसीको तूने यों बे ठिकाना॥

५

उसके ही बागमें तू उसके कटाके बच्चे।
मुनसिफ़ भी बनके खुदहीं तू कर चुका बहाना॥

६

दर्दे जिगर से लेकिन चीखूँगी जब मैं हरदम।
गुलचीं सुनेगा मेरा पुर दर्द यह फ़िसाना॥

७

सोजे, निहांकी बिजली सिर पै गिरेगी तेरे।
ज़ालिम तु मर मिटेगा बदलेगा यह ज़माना॥

८

मुझको न इस तरहका तब कुछ मलाल होगा।
गुलज़ार फिर बनेगा अशरत का कारख़ाना॥

भजन नं ५३

(कविरत्न प० हरिशंकर शर्मा)

चेतो रे भाई भारतकी जय बोल—टेक
बैर बिसारो प्रेम पसारो बांधश्कर गोल
होकर हिंसा हीन बजा दो असहयोगका ढ़ोल—चेतो०
दो स्वराज्यवादी अगुवोंको आदर मान अतोल
प्यारे देश भक्त मण्डलमें करते रहो कलोल—चेतो०
कातो सूत बुनो करघोंसे खद्दरके मिल खोल

लेना नहीं विदेशी कपड़े दमड़ी गज भी मोल—चेतो०
नचकीली लक्ष्मीके जिसमें बजते थे रमझोल
ऐसा राष्ट्र किया ठगियोंने ठग ठग डामाडोल—चेतो०
हाय पिलाता है जो हमको पारतन्त्र्य विष घोल
खोलो उस नौकर शाहीके कपट जालकी पोल-चेतो०
देशी खेत उजाड़ रहा है परदेशी छल कोल *
खाते हैं जीवनकी जड़कें टूक टटोल टटोल- चेतो०
गोरे गटके मांस रक्त भी पीते भरभर डोल
जी हजूर काले हिजड़ोंके उगलो कसठ कपोल-चेतो०
अटका पोच प्रजा कृष्णासे दुःशासन धिङ्गोल
देखो कृष्ण सुदर्शन धारी अब तो अंखिया खोल-चेतो०

---

* सूअर

सर्व साधारणको विदित हो कि हमारे यहाँ वर्तमान आन्दोलन सम्बन्धी—तथा धार्मिक व ऐतिहासिक—सर्व प्रकार की गद्य पद्य पुस्तकें मिल सकती हैं। जिनकी कि संक्षिप्तसूची नीचे दीजाती है विशेष हाल जाननेके लिये बडा सूचीपत्र निम्न लिखित पतेसे मंगाकर देखिये।

राष्ट्रीयगीताञ्जलि	।-)	बालमनुस्मृति	।-)
द्वितीय भाग	≡)	महारानी मन्दालसाका	
वासुदेवभजनरत्नमाला	।=)	जीवनचरित्र	=)॥
स्त्री भजन भण्डार	।≡)	लक्ष्मी उपन्यास	≡)॥
वासुदेवभजनबत्तीसी	=)॥	नीतिसौन्दर्य	≡
कारनामा आर्यसमाज	≡)॥।	आर्यभाषा पाठावलि	।
नूतन भजन संग्रह	=)॥	प्रथम वा २ भाग	
सन्ध्या	)॥	कन्या शिक्षासागर	
हवनमन्त्र	)॥	सच्चा पति पत्नी प्रेम	
आर्योद्देश्यरत्नमाला	)॥	पतिव्रत धर्म	
व्यवहारभानु	≡)॥	उच्चात्रस्था	
आर्याभिविनय	।≡)।	नारीभजन विलास	
पञ्चमहायज्ञविधि	।≡)॥	पुष्पाञ्जलिः	
हिण्डोलमल्हार	।-)॥	संगीतचन्द्रिका	
सीतादेवी	।=)	संस्कारकीर्तन	
वनिता विनोद	≡)॥	महिलाजीवन	।≡)॥
हकीकतरायबलिदान	।)	सांख्यदर्शनभाषानुवाद	
रामायणभूषण	।)	स्वामी दर्शनानन्द	॥।)
बालसत्यार्थप्रकाश	।-)		

मिलनेकापताः— न्यादरदत्त शर्मा वासुदेवपुस्तकालय धामपुर

विशेष सूचना

सर्व साधारणको विदित हो कि हमारे "सरस्वतीऔषधा-लय" में हर प्रकारकी प्रत्येक रोगों पर अनुभूत तथा तुरत गुण दिखाने वाली औषध तय्यार रहती हैं। एकवार अवश्य मंगाकर परीक्षा कीजिये। रोगीका पूरा२ हाल ज्ञात होने पर ...ध वी० पी० पार्सल द्वारा बाहर भी भेजी जासकती हैं। ... समाचार जाननेके लिये निम्न लिखित पते पर पत्र ...र कीजिये।

...द्यराज श्रीपण्डित न्यादरदत्तजीशर्मा

प्रबन्धकर्त्ता—

सरस्वती औषधालय

धामपुर

बिजनौर (यू० पी०)

मुद्रक—पं० कृष्णकुमार शर्मा
विद्यामन्दिर प्रेस, लखनऊ ।